गुलगुला

कभी कहीं एक बुढ़िया और बूढ़ा रहते थे।
एक दिन बूढ़े ने कहा – "अरी, मेरी बुढ़िया, एक गुलगुला तो पका।" – "किससे

पकाऊं, आटा तो है नहीं।" – "अरी बुढ़िया, ज़रा आटे के कुठार को बुहार ले, अनाज के कुठार को झाड़ ले, थोड़ा बहुत आटा हो जायेगा।"

तो बुढ़िया ने हंस का पंख लिया, आटे के कुठार को बुहारा, अनाज के कुठार को झाड़ा और दो मुट्ठी आटा निकल आया। उसने आटे को दही में गूंधा, घी में तला और

गुलगुले को ठण्डा होने के लिये खिड़की में रख दिया। गुलगुला पड़ा रहा, पड़ा रहा और अचानक लुढ़क चला। खिड़की से बेंच पर आया, बेंच से फ़र्श पर, फ़र्श पर लुढ़कता-

लुढ़कता पहुंचा दरवाज़े पर, दहलीज़ को लांघकर पहुंचा ड्योढ़ी में, ड्योढ़ी से अहाते में, अहाते से फाटक तक और ऐसे आगे ही आगे।

गुलगुला लुढ़कता जा रहा था सड़क पर और उसके सामने आया ख़रगोश। "गुलगुले, रे गुलगुले, मैं तुझे खाऊंगा।" – "मुझे नहीं खा, भेंगे ख़रगोश, मैं तुझे एक गाना सुना देता हूं," गुलगुले ने कहा और गाने लगा –

आटे के कुठार को
अनाज के कुठार को,
झाड़कर, बुहारकर
दही मुझमें डालकर,
घी में तल लिया गया,
ठण्डा होने के लिये
खिडकी में धरा गया,
मैं दादा से बच निकला
मैं दादी से बच निकला,
सुन, तुझसे खरगोश रे
बचना मुश्किल क्या भला?

और गुलगुला आगे लुढ़क चला। ख़रगोश बस, देखता ही रह गया!..
गुलगुला लुढ़कता जा रहा था, लुढ़कता जा रहा था, सामने से आ गया भेड़िया।
"गुलगुले, रे गुलगुले, मैं तुझको खा जाऊंगा।" – "मुझे नहीं खाओ, भूरे भेड़िये,

मैं तुम्हें गाना सुना देता हूं":

आटे के कुठार को
अनाज के कुठार को,
झाड़कर, बुहारकर
दही मुझमें डालकर,
घी में तल लिया गया,
ठण्डा होने के लिये
खिड़की में धरा गया,
मैं दादा से बच निकला
मैं दादी से बच निकला,
खरहे को भी नहीं मिला
अरे भेड़िये, तुझसे भी
बचना मुश्किल क्या भला?

और वह आगे लुढ़क चला। भेड़िया देखता ही रह गया।

गुलगुला लुढ़कता जा रहा था, लुढ़कता जा रहा था कि सामने से आ गया भालू। "गुलगुले, रे गुलगुले, मैं तुझको खा जाऊंगा।" – "टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाले, तुम क्या मुझको खाओगे!"

आटे के कुठार को
अनाज के कुठार को,
झाड़कर, बुहारकर
दही मुझमें डालकर,
घी में तल लिया गया,
ठण्डा होने के लिये
खिड़की में धरा गया,
मैं दादा से बच निकला
मैं दादी से बच निकला,
मैं खरहे को नहीं मिला
भेड़िये को भी नहीं मिला,
सुन रे भालू तुझसे तो
बचना मुश्किल क्या भला?
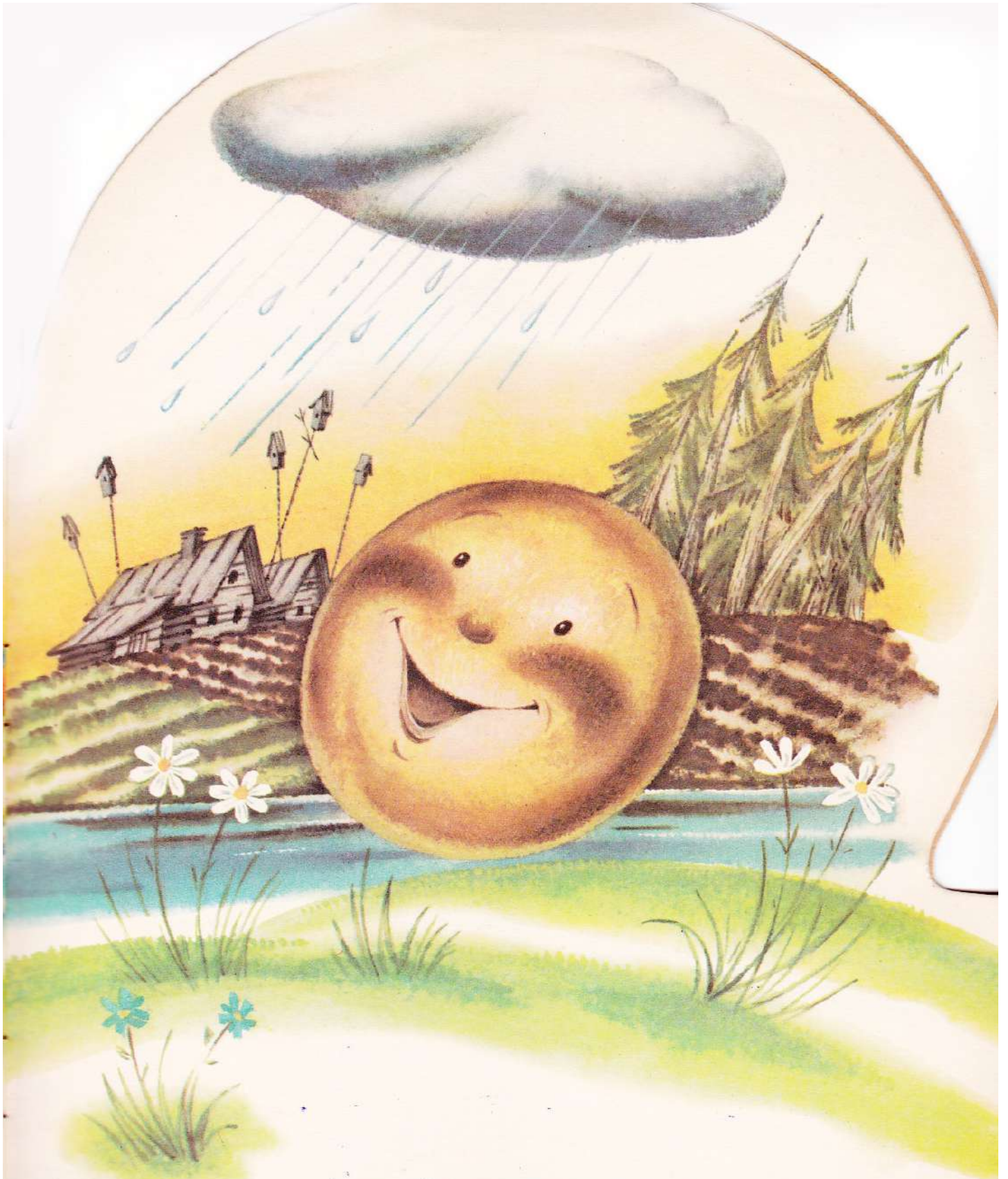
और वह आगे लुढ़क चला, भालू देखता ही रह गया!..

गुलगुला लुढ़कता गया, लुढ़कता गया और उसे आगे मिली लोमड़ी।
"गुलगुले, रे गुलगुले, तुम कितने सुन्दर, प्यारे हो।"
और गुलगुला गाने लगा–

आटे के कुठार को
अनाज के कुठार को,
झाड़कर, बुहारकर
दही मुझमें डालकर,
घी में तल लिया गया,
ठण्डा होने के लिये
खिड़की में धरा गया,
मैं दादा से बच निकला
मैं दादी से बच निकला,
खरहे को भी नहीं मिला
नहीं भेड़िये, मैं भालू को नहीं मिला,
तुझसे सुन री, लोमड़ी
बचना मुश्किल क्या भला!

"कितना प्यारा गाना है!" लोमड़ी ने कहा। "किन्तु गुलगुले, मैं तो बूढ़ी हो गयी हूं, ऊंचा सुनती हूं। तुम मेरी थूथनी पर बैठकर एक बार फिर से गा दो अपना गाना।" गुलगुला उछलकर लोमड़ी की थूथनी पर बैठ गया और फिर से यही गाना गाने लगा। "धन्यवाद, गुलगुले! बड़ा ही मधुर गीत है, और सुनने को मन करता है! मेरे प्यारे, ज़रा मेरी जीभ पर बैठकर इसे आखिरी बार गा दो तो।" लोमड़ी ने इतना कहकर अपनी जीभ बाहर निकाल ली। गुलगुला मूर्खता करते हुए उछलकर उसकी जीभ पर जा बैठा और लोमड़ी झटपट मुंह बन्द करके उसे खा गयी।

गुलगुला

रूसी लोक कथा

अनुवादक: मदनलाल 'मधु'

चित्रकार: व० कुर्चेव्स्की

सोवियत संघ में मुद्रित